शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKflr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक १३ : नई दिल्ली : १-७ जुलाई २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद चातुर्मासिक प्रवास हेतु जसोल पधार गए हैं। पूज्यप्रवर का इस नगर में छत्तीस कौमों की ओर से भव्य स्वागत हुआ है। इस अवसर पर शैक्षणिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। आगामी चतुर्मास ३ जुलाई से प्रारंभ हो रहा है। चतुर्मास काल में सेवार्थी श्रद्धालुओं के आने का क्रम प्रारंभ हो गया है।

le>k ikik dk&„

µvkpk; egkJe.k

''प्रश्न होता है दुनिया में सारभूत तत्त्व क्या है? किसी ने कहा--'अस्मिन्नसारे संसारे सारं सारंगलोचना' इस असार संसार में स्त्री यानी भोग सारभूत है। किसी आर्थिक दृष्टि वाले व्यक्ति ने कहा--'अस्मिन्नसारे संसारे, सारं सारस्य प्रापणम्'--इस असार संसार में धन का अर्जन करना ही सारभूत है। कोई जुआरी वहां बैठा था, उसने कहा--'अस्मिन्नसारे संसारे, सारं द्यूतस्य क्रीड़नम्'--इस असार संसार में जुआ खेलना सारभूत है। ईमानदारी के प्रति आस्था रखने वाले किसी व्यक्ति ने कहा--'अस्मिन्नसारे संसारे, सारं सत्यस्य सेवनम्'--सत्य का सेवन करना सारभूत है। आर्हत वाङ्मय में कहा गया--'सच्चं लोयम्मि सारभूयं'--सत्य लोक में सारभूत है। हमारी दुनिया में झूठ भी चलता है और सचाई भी जीवित है। आदमी यदा-कदा झूठ का सहारा ले लेता है। मेरा मानना है, अगर समाज में ईमानदारी प्रतिष्ठित रहे, लोग झूठ बोलने से बचते रहें तो समाज की व्यवस्था बहुत अच्छी बन सकती है, समाज की समस्याओं का समाधान हो सकता है।

झूठ बोलने के चार कारण बताए गए हैं-- से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा'--आदमी क्रोध के कारण झूठ बोल देता है, लोभ के कारण झूठ बोल देता है, भय के कारण झूठ बोल देता है और हंसी-मजाक में भी कभी-कभी झूठ बोल देता है।

वे व्यक्ति धन्य हैं, जिन्हें झूठ से घृणा है, जो झूठ का सहारा लेना नहीं चाहते। गुस्सा करना पाप है तो झूठ बोलना भी पाप है। कोई आदमी गुस्सा तो नहीं करता, किन्तु बात-बात में दूसरों को ठगता है, जबानरूपी मीठी छुरी दूसरों के गले पर चलाने का प्रयास करता है तो वह भी बहुत बड़ा पाप है। कभी-कभी तो साफ-साफ कहना और कड़ाई से कहना ज्यादा अच्छा है, बजाय इसके कि मीठा बोल कर किसी को ठगने की चेष्टा की जाए। आदमी को अगर जीवन में अध्यात्म की साधना करना है, नैतिकता की आराधना करना है तो वह झूठ बोलने से बचने का प्रयास करे।

सचाई की अपनी शक्ति होती है। संस्कृत साहित्य का प्रसिद्ध सूक्त है--**lR;eo t;r ukure** अर्थात सत्य की विजय होती है, झूठ की नहीं। सत्य परेशान तो हो सकता है, परास्त नहीं होता। सत्य के सामने कठिनाइयां और संघर्ष तो आ सकते हैं, परन्तु जो तत्त्व सत्य से प्राप्त होता है, वह झूठ से प्राप्त नहीं·हो सकता। आचार्य सोमप्रभसूरि ने सत्य की महिमा बताते हुए कहा--

rL;kfXutye.kof LFkyefjfe=k lj% fddjk%]
dkUrkj uxj fxfjxgefgekY; exkfjex%A
ikrky fcyeL=keRiyny 0;ky% Jxkyk fo"k]
ih;"k fo"ke le p opu lR;kfpr ofDr ;% Ï

जो व्यक्ति सत्य से युक्त वचन बोलने वाला है, उसके लिए आग जल बन जाती है, समुद्र स्थल बन जाता है, शत्रु मित्र बन जाता है, देवता उसके चाकर बन जाते हैं, जंगल उसके लिए नगर, पहाड़ घर, सर्प माला, शेर मृग, पाताल छोटा-सा बिल, अस्त्र कमलदल, दुष्ट हाथी श्रृगाल और विष उसके लिए अमृत बन जाता है। सत्य की इतनी कठोर साधना करना आसान काम नहीं है। कोई मनोबली व्यक्ति, जिसका यह संकल्प हो कि जीवन भले चला जाए, प्राण छूट जाए, पर मैं सचाई को नहीं छोड़ूंगा, ऐसा व्यक्ति ही ऐसी साधना कर सकता है। यद्यपि मैं दुनिया में नास्ति तो नहीं मानता। ऐसे महापुरुष भी मिल सकते हैं, जो सचाई के प्रति बहुत गहरी निष्ठा रखने वाले होते हैं। भले पैसा जाए तो जाए, पर वे सत्य को नहीं जाने देते।

सेठ सो रहा था। स्वप्न में उसने देखा, कोई देवांगना सामने प्रस्तुत है। उसने स्वप्न में ही उससे पूछा 'अम्बे! तुम कौन हो ?'

उत्तर मिला--'मैं लक्ष्मी हूं। अब मैं तुम्हारे घर से विदा लेना चाहती हूं।'

लक्ष्मी को चंचल कहा गया है।

pyk y{eh pyk ik.k py thfor;koueA
pykpy-fLeu lalkj ekel ,dk-fg fu'pykAA

लक्ष्मी चंचल है, प्राण चंचल है, यौवन चंचल है, जीवन भी चंचल है। इस चलाचल संसार में एक धर्म ही निश्चल तत्त्व है।

लक्ष्मी की बात सुनकर सेठ ने कहा--'देवी! तुम्हारी इच्छा हो तो रहो, इच्छा न हो तो जाओ। मैं तुम्हें रोक नहीं सकता। धन रहे या जाए, मेरे लिए कोई खास बात नहीं है।' कुछ समय बाद फिर सुप्तावस्था में सेठ को एक दिव्य पुरुष दिखाई दिया।

सेठ ने पूछा--'महाशय! आप कौन हैं ?'

उत्तर मिला--'मैं सत्य नामक देव हूं।'

सेठ--'मेरा अहोभाग्य जो आपके दर्शन हुए। बताएं, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।'

सत्य बोला--'मैं सेवा लेने या देने की आकांक्षा से नहीं आया, मैं तो तुम्हें सूचना देने आया हूं कि मैं अब तुम्हारे घर से जाना चाहता हूं।'

सेठ ने स्वप्न में ही उसके पांव पकड़ लिए और कहा--'लक्ष्मी मेरे घर से चली गई। उनके जाने की मुझे चिन्ता नहीं, लेकिन आपको मैं नहीं जाने दूंगा, क्योंकि आप मेरे सर्वस्व हैं। आपके बिना तो जीवन ही व्यर्थ है।'

सत्य ने कहा--'मेरे प्रति तुम्हारी इतनी आस्था है तो ठीक है, मैं तुम्हारे पास रहूंगा।'

सेठ की स्वप्न यात्रा जारी थी। थोड़ी देर बाद उसने देखा--वही देवी पुनः सामने खड़ी है, जिसने कुछ समय पहले स्वप्न में स्वयं को लक्ष्मी बताया था और घर से चले जाने की बात कही थी। सेठ ने जिज्ञासा भाव से लक्ष्मी की ओर देखा तो उन्होंने कहा--'सत्य भी तुम्हारा घर छोड़ना चाहता था, किन्तु तुमने उसे जाने नहीं दिया और आग्रहपूर्वक रख लिया। इसलिए अब मैं भी लौट आई हूं। मेरी विवशता यह है कि जहां सत्य पुरुष विराजमान हैं, मैं उनसे दूर नहीं रह सकती।'

मैं यह तो नहीं कह सकता कि सारे ईमानदार लोग खूब धनवान होते हैं, परन्तु ईमानदारी अपने आप में बहुत बड़ी संपत्ति है। ईमानदारी से बड़ा धन क्या होगा?

एक प्रसंग प्राप्त होता है--एक व्यक्ति ईमानदारी में निष्ठा रखने वाले एक वकील के पास आया और बोला--'आप बैरिस्टर हैं। आपका बड़ा नाम सुनकर आपके पास आया हूं। मैं चाहता हूं कि आप मेरा केस अपने हाथ में लें।'

उस वकील ने उससे कहा--'वकालत मेरा पेशा जरूर है, लेकिन इस पेशे में भी मैं सत्य और ईमानदारी को प्रमुखता देता हूं। आप बताएं कि आपका केस सच्चा है या झूठा?'

आगन्तुक व्यक्ति ने कहा--'केस तो झूठा है, लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है। तर्क और दलीलों से झूठ को सच और सच को झूठ साबित कर देना वकीलों के लिए बाएं हाथ का खेल है। मेरा विश्वास है कि आप मुझे कोर्ट में विजय दिला देंगे।'

वकील ने कहा--'क्षमा करना भाई! तुम शायद गलत जगह आ गए। मैं किसी भी स्थिति में झूठ का पैरोकार बनना नहीं चाहता।'

वह व्यक्ति हर स्थिति में अपना केस जीतना चाहता था। वह दूसरे वकील के पास गया। मुंहमांगी फीस देकर उसने उसे अपना वकील बनाया और वकील ने अन्ततः उसका केस जीत लिया। कुछ दिन बाद वह व्यक्ति पुनः उस वकील से मिला और बोला--'आपके इन्कार करने के बाद मैंने अमुक को अपना वकील नियुक्त किया। फीस के रूप में पैसा तो मुझे बहुत खर्च करना पड़ा, लेकिन वकील ने कोर्ट में ऐसी जोरदार बहस की कि केस मैं जीत गया।' उस व्यक्ति के चेहरे पर वकील को मोटी रकम चुकाने का दर्द नहीं, झूठे केस को जीत लेने की विजयी मुस्कान थी।

वकील ने कहा--'तुम्हें यह अनुभूति बहुत बाद में होगी या शायद नहीं भी होगी कि तुमने बहुत सारा पैसा ही नहीं खोया, बल्कि ईमानदारी को भी खोया है, जो किसी व्यक्ति की सबसे बड़ी पूंजी होती है।'

ईमानदारी और सचाई का जो मूल्य है, उसके सामने पैसा बहुत तुच्छ चीज है। आदमी यह प्रयास करे कि पैसा तो पास में भले कम आए, वह कोई बड़ी बात नहीं, पर ईमानदारीरूपी पैसा आपके पास रहे। ईमानदारी से कमाए गए दो पैसे का भी बहुत मूल्य है, किन्तु बेईमानी से कमाए गए करोड़ों रुपये का कोई विशेष मूल्य नहीं है।

परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी अर्थ के संदर्भ में दो शब्दों का प्रयोग करते थे--अर्थ और अर्थाभास। **U;k;kikftr vFkZ**--न्याय और ईमानदारी से कमाया जाए, वह तो अर्थ है और बेईमानी से कमाया जाए, वह अर्थाभास है। जनता के पास अर्थाभास नहीं रहना चाहिए। अर्थ तो खैर, गृहस्थ को रखना पड़ता है, लेकिन अर्थाभास से आदमी बचने का प्रयास करे। कहा गया है--

lkp cjkcj ri ugh] >B cjkcj ikiA
tkd fgjn lkp g] rk fgjn iHk vkiAA

सत्य एक प्रकार का बड़ा तप है और झूठ एक पाप है। लेकिन जिसके हृदय में सचाई विराजमान होती है, उसके हृदय में भगवत्ता विराजमान होती है।

साधु के लिए झूठ से बचना फिर भी थोड़ा आसान है, पर गृहस्थ के लिए झूठ से पूर्णतया बचना बहुत मुश्किल काम है। कोई व्यक्ति गृहस्थ जीवन जीते हुए, गार्हस्थ्य में रहते हुए, व्यापार-धंधा करते हुए, राजनीति में रहते हुए तथा और भी अन्य अनेक काम करते हुए सचाई की साधना करता है तो मैं उसे दुनिया का कोई दिव्य पुरुष मानूंगा। आदमी पूर्णतया सत्य की साधना न भी कर सके, पर कुछ अंशों में प्रयास अवश्य करे। वह यह संकल्प करे कि मैं छोटा-मोटा कष्ट भले सह लूं, पर झूठ बोलने से बचूं। कहीं सत्य बोलने में कठिनाई हो तो आदमी मौन कर ले, कुछ भी न बोले। गुरुदेव तुलसी ने अपने गीत में कहा--

lR;okfnrk lèk u FkkL; rk jg.kk pipki gA
diVkb dj >B cky.kk tx e ekVk iki gAA
,d ckj rk >B lkp dj dke lkjy vki jk]
ekMk cxk QV;k ljlh ?kMk HkjhT;k iki jkA
vk y[k.kk L; vkf[kj vko ikrh i'pkÙkki gAA

झूठ बोलना एक बड़ा पाप माना गया है। विद्यार्थियों और बच्चों में सत्यवादिता के संस्कार भरे जाने चाहिए। उन्हें यह बात हृदयंगम कराई जाए कि बात को आगे-पीछे नहीं करना चाहिए, उसे तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत नहीं करना चाहिए। जो बात जैसी है, उसे उसी रूप में प्रस्तुत करनी चाहिए। जोड़-तोड़ करना, उसमें नमक-मिर्च लगाकर कहना, कुछ अंशों में सचाई को चोट पहुंचाने जैसा है। आदमी सरलतापूर्वक बोले, यथार्थ संभाषण का प्रयास करे। यह यथार्थ संभाषण जिसके जीवन की वृत्ति बन जाता है, उस आदमी का जीवन बड़ा पवित्र बन जाता है, धन्य बन जाता है। उसके जीवन में सचाई आ जाती है और वह अनेकानेक पापों से बचने की स्थिति में आ सकता है।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में कहा गया--**^LoYiel;L; èkeL; =kk;r egrk Hk;kr***--धर्म का थोड़ा-सा अंश भी जीवन में आ जाता है तो वह आदमी को महान भय से उबारने वाला होता है। आप कोई भी काम-धंधा करें, व्यापार करें, फाइलें देखें, डॉक्टरी करें, वकालत करें, अध्यापन करें, कोई भी काम करें, यह चिंतन रहे कि मेरे कार्य में प्रामाणिकता है या नहीं? मेरे कार्य में सचाई है या नहीं? मैं अप्रामाणिकता से स्वयं को कितना बचा सकता हूं? ऐसा चिंतन करते हुए हम अपने आपको सचाई के पथ पर आगे बढ़ाने का प्रयास करें।''

gj {k.k tkx:d jg

„, tuA परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में आयुष्य कर्म की चर्चा करते हुए कहा--'प्राणी कब तक जीवित रहेगा, इसका मुख्य आधार है आयुष्य कर्म। यदि आयुष्य लंबा बंधा हुआ है और यथाविधि पूरा भोगने में आता है तो किसी की ताकत नहीं जो समय से पूर्व प्राणी को मार दे। यदि आयुष्य छोटा बंधा हुआ है तो किसी की ताकत नहीं जो प्राणी को लम्बेकाल तक जीवित रख दे। किस व्यक्ति का आयुष्य कितना बंधा हुआ है, यह जानना मुश्किल है। इस कर्म की महिमा मानो विचित्र है। नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव इन चार गतियों का आयुष्य होता है। यह तो निश्चित है कि अगली गति के आयुष्य को बांधे बिना प्राणी अगला जन्म ले नहीं सकता और इस कर्म का बंध जीवन में एक बार होता है। इसलिए हर क्षण जागरूक रहना चाहिए। यह चिन्तन और प्रयास सतत रहे कि अधोगति के आयुष्य का बंधन न हो। जैन परम्परा में संलेखना-संथारे का विधान प्राप्त होता है। अनेक साधु-साध्वियां और श्रावक-श्राविकाएं मृत्यु से पूर्व अनशन स्वीकार करते हैं। अनशन करना साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविका का एक मनोरथ होता है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आत्मा का कल्याण कर सकता है।'

कार्यक्रम में मुनि महावीरकुमारजी ने अपने गीत का संगान किया। मुनि रजनीशकुमारजी ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। दीक्षार्थी अशोक के प्रति वैभव बोथरा, दीपांशा बोथरा, चेतना बोथरा तथा दीक्षार्थी जय के संदर्भ में शिवांगी मेहता ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। मंत्रीमुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

आज मध्याह्न में दीक्षार्थियों की शोभायात्रा पचपदरा के विभिन्न मार्गों से होती हुई ओसवाल भवन पहुंचकर परिसंपन्न हुई। तत्पश्चात परमपूज्य आचार्यवर से दीक्षार्थियों ने मंगलपाठ का श्रवण किया। रात्रि में पारमार्थिक शिक्षण संस्था के तत्त्वावधान में दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह का समायोजन हुआ। जिसमें परमपूज्य आचार्यवर ने दीक्षार्थियों को पावन संबोध प्रदान किया। कार्यक्रम में मुमुक्षु बहनों, परिजनों और अन्य श्रावक समाज ने दीक्षार्थियों के प्रति आध्यात्मिक मंगलभाव अभिव्यक्त किए।

Hk0; nh{kk lekjkg

„f tuA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः दो समाणियों तथा पांच मुमुक्षुओं को मुनि दीक्षा प्रदान की। कार्यक्रम का प्रारंभ पूज्यप्रवर के महामंत्रोच्चार से हुआ। श्रेणी आरोहण हेतु समुपस्थित समणी

वर्धमानप्रज्ञाजी और समणी सुयशप्रज्ञाजी ने अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किए। दीक्षार्थी मुमुक्षु अशोक, मुमुक्षु जय तथा मुमुक्षु विवेक, दीक्षार्थिनी मुमुक्ष वीणा व मुमुक्षु हर्षिता ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए पूज्यवर से शीघ्रातिशीघ्र संयमरत्न प्रदान करने की प्रार्थना की।

समणी अचलप्रज्ञाजी ने श्रेणी आरोहण हेतु समुद्यत समणीद्वय तथा मुमुक्षु गुणश्री और मुमुक्षु रेखा ने दीक्षार्थियों का परिचय प्रस्तुत किया। श्रीडूंगरमल बागरेचा द्वारा आज्ञापत्र के वाचन के उपरान्त दीक्षार्थियों के माता-पिता ने आचार्यवर के करकमलों में आज्ञापत्र समर्पित किए। पूज्यप्रवर ने दीक्षार्थियों के ज्ञातिजनों से मौखिक स्वीकृति भी प्राप्त की तथा दीक्षार्थियों की आन्तरिक भावना को पुनः परखा।

शुभ मुहूर्त पर परम श्रद्धास्पद आचार्यवर ने भगवान महावीर और तेरापंथ की पूर्ववर्ती आचार्य परम्परा का सश्रद्धा स्मरण कर आर्षवाणी के उच्चारण के साथ समणीद्वय तथा पांच दीक्षार्थियों को मुनि दीक्षा प्रदान की। नवदीक्षित साधु-साध्वियों ने तीन बार प्रदक्षिणापूर्वक पूज्यप्रवर को वंदना की। आचार्यवर ने उन्हें अतीत की आलोचना करवाई। तत्पश्चात् पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित साधुओं का केशलुंचन करते हुए उन्हें आर्ष आशीर्वाद के साथ रजोहरण प्रदान किया। आचार्यवर की अनुज्ञा से साध्वीप्रमुखाजी ने नवदीक्षित साध्वियों का केशलोच संस्कार करते हुए उन्हें रजोरहण प्रदान किया। तत्पश्चात् पूज्यवर ने नवदीक्षित साधु-साध्वियों का नामकरण संस्कार किया। नवदीक्षित साधु-साध्वियों के नाम इस प्रकार हैं

१. मुमुक्षु अशोक (चेन्नई)	मुनि अनेकान्तकुमार	४. समणी वर्धमानप्रज्ञा(व्यावर)	साध्वी वर्धमानयशा
२. मुमुक्षु जय (वाव)	मुनि जागृतकुमार	५. समणी सुयशप्रज्ञा(परतूर)	साध्वी संबोधयशा
३. मुमुक्षु विवेक (बरपेटारोड)	मुनि विवेककुमार	६. मुमुक्षु वीणा (कनाना)	साध्वी विधिप्रभा
		७. मुमुक्षु हर्षिता(बरपेटारोड)	साध्वी हिमांशुप्रभा

पूज्यवर के निर्देश पर विशाल जनमेदिनी ने 'मत्थएण वंदामि' का उच्चारण कर नवदीक्षित साधु-साध्वियों का अभिवादन किया। पूज्यप्रवर ने अपने दीक्षान्त संबोध में नवदीक्षित साधु-साध्वियों को हर कार्य में जागरूक रहने और संयम रखने की प्रेरणा प्रदान की तथा स्वाध्याय, ध्यान, तपस्या आदि के द्वारा अपनी आत्मा का कल्याण करते हुए यथासंभव जनकल्याण करने हेतु भी उत्प्रेरित किया।

f"k"; fHk{kk nu oky vfHkHkkod èkU;

दीक्षा समारोह के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने कहा--'हमारी दुनिया में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो साधना के लिए अभिनिष्क्रमण करते हैं। अपने आपको गार्हस्थ्य से मुक्त बना लेना चारित्र को स्वीकार करना इस जीवन की ही नहीं, इस जीव की महान् उपलब्धि होती है। इस अनंतकाल की यात्रा में वह क्षण अत्यन्त मह वपूर्ण होता है, जब जीव चारित्र को स्वीकार करता है। कोई निमित्त ऐसा मिलता है कि जीव वैराग्य को प्राप्त हो जाता है। कहीं-कहीं वैराग्य भाव अस्थाई भी हो सकता है, किन्तु कुछ भव्य आत्माएं ऐसी होती हैं, जिन्हें स्थाई वैराग्य प्राप्त हो जाता है और वे संयम पथ पर अभिनिष्क्रमण कर देती हैं। अनुस्रोत में बहने वाले बहुत लोग मिलेंगे, किन्तु जो लोग प्रतिस्रोत में चलकर आत्मकल्याण के लिए प्रस्थित हो जाते हैं, वे धन्य होते हैं।'

परमपूज्य कालूगणी, गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा बाल्यावस्था में ली गई दीक्षा का उल्लेख करते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा--'हमारे धर्मसंघ के इतिहास पर ध्यान दिया जाए तो काफी साधु पन्द्रह वर्ष से कम उम्र में दीक्षित हो गए। कोई भाग्योदय होता है और व्यक्ति अल्पायु में संयम स्वीकार कर लेता है, शासन की शरण में आ जाता है। हमारे संघ का सौभाग्य है कि छोटे-छोटे साधु प्राप्त होते रहे हैं। साध्वियों में भी काफी साध्वियां अविवाहित अवस्था में दीक्षित हुई हैं, ऐसा मेरा अनुमान है। गुलाबसती तो साढ़े सात वर्ष की अवस्था में दीक्षित हो गई। हमारे संघ में वह सबसे छोटी उम्र की दीक्षा थी। इस दृष्टि से तो गुलाबसती साधु-संस्था के लिए आदर्श है। बाल्यावस्था में दीक्षित होना सौभाग्य होता है कि

'ज्यूं की त्यूं धर दीन्हीं चदरिया'। अविवाहित अवस्था में दीक्षित हो जाना और आजीवन पालन कर लेना बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। आचार्यवर ने इस प्रसंग में मंत्री मुनि, मुनि कुमारश्रमणजी और मुनि मृदुकुमारजी द्वारा बाल्यावस्था में ली गई दीक्षा का भी उल्लेख किया।

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'मैं तो उन परिवार वालों का भी सौभाग्य मानूंगा, जो अपने लाडलों को दीक्षा की अनुज्ञा प्रदान करते हैं, संघ में समर्पित करते हैं। दूध आदि बहराना बड़ी बात नहीं, किन्तु शिष्य भिक्षा बड़ी भिक्षा होती है। वे माता-पिता सौभाग्यशाली होते हैं, जो अपनी संतान की भिक्षा देते हैं और स्वयं को धन्य बना लेते हैं। मेरा मानना है कि अभिभावकों को परीक्षा करनी चाहिए, किन्तु उसके बाद उन्हें संतोष हो जाए कि मेरी संतान दीक्षा के योग्य है तो फिर उन्हें बाधक नहीं बनना चाहिए।' पूज्यप्रवर के आह्वान पर पंडाल में उपस्थित अधिकांश व्यक्तियों ने परिवार में किसी दीक्षार्थी के तैयार होने पर उसे 'ना' कहने का परित्याग किया।

गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी के संदर्भ अपने संकल्प की चर्चा करते हुए आचार्य प्रवर ने कहा--'मैंने तो मन में मंगलभावना संजोई है कि परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के प्रति हमारा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण श्रद्धार्पण यह होगा कि उनकी जन्म शताब्दी अर्थात् सन् २०१४ की कार्तिक शुक्ला द्वितीया तक सौ मुनि दीक्षाएं हो जाएं। लगता है--भावना संजोने के बाद दीक्षाओं में कुछ गतिमत्ता भी आई है। अनेक-अनेक मुमुक्षु बालक-बालिकाएं तैयार हो रहे हैं। हमारे साधु-साध्वियां और समणश्रेणी इस कार्य में तत्पर बने हैं, वे और ज्यादा तत्पर बनें। एक-एक ग्रुप (साझ और सिंघाड़े) के द्वारा दो-दो दीक्षार्थी तैयार हो तो काफी कार्य हो सकता है। मैं तो यहां तक कहता हूं कि साधु-साध्वियां भले दो पुस्तक कम लिख लें, किन्तु दो दीक्षार्थी तैयार कर लें तो मैं उसे सौ पुस्तकों के बराबर मान लूंगा।

योग्य दीक्षा पर बल देते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'मेरा तो मानना है कि दीक्षा बिल्कुल साफ-सुथरी होनी चाहिए। न बहलाकर, न फुसलाकर, अपितु अन्तर्मन में वैराग्य भाव परिपुष्ट लगे तो ही दीक्षा होनी चाहिए। मात्र संख्यावृद्धि के लिए दीक्षा नहीं होनी चाहिए। हमारे यहां तो शिक्षा दी गई कि योग्य को ही दीक्षित करो और दीक्षा देने के बाद भी कोई अयोग्य निकल जाए तो उसे संघ से पृथक कर दो। महामना आचार्य भिक्षु की यह महान शिक्षा हमारी स्मृति में रहे।'

अपने प्रवचन के उपरान्त आचार्यवर ने शासनश्री मुनि पानमलजी व शासनश्री मुनि किशनलालजी के घोषित क्रमशः पचपदरा और बालोतरा चतुर्मास को निरस्त करने की अवगति देते हुए उन्हें जसोल चतुर्मास में साथ रखने की घोषणा की। पूज्यप्रवर ने मुनिद्वय के समर्पणभाव की श्लाघा भी की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

pgjk ugh] pfj=k lnj cuk,

„„ tuA परम पूज्य आचार्यवर आज प्रातः पचपदरा के पुनर्निर्मीयमाण तेरापंथ भवन के बाहर पधारे और वहां कुछ क्षण खड़े होकर 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया। कार्यकर्ताओं ने आचार्यवर से मंगलपाठ का श्रवण किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। भारतीय पर्यटन विकास निगम के निदेशक श्री ललित के पंवार ने मायड़ भाषा में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्री ओमप्रकाश बांठिया और अरविन्द मदाणी ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री विजयराज संकलेचा ने गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में नामकर्म को व्याख्यायित करते हुए कहा--'प्राणी के जीवन में कुछ सुख-दुःख, अनुकूलता-प्रतिकूलता तथा रूप-रंग आदि की जो शारीरिक स्थितियां बनती हैं, उनका आधारभूत है-नामकर्म। यह कर्म पुण्यात्मक और पापात्मक अर्थात् शुभ और अशुभ दोनों प्रकार

का होता है। कथनी-करनी की ऋजुता शुभ नाम कर्म तथा कुटिलता अशुभ नाम कर्म बंधन के कारण बनती है। व्यक्ति में कायिक, वाचिक और मानसिक ऋजुता विकसित होनी चाहिए। क्योंकि ऋजुता से आत्मकल्याण संभव है। व्यवहार निश्छलतापूर्ण हो। आत्मोत्थान के लक्ष्य से कुटिलता को छोड़कर जीवन व्यवहार में ऋजुता का विकास करें।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'व्यक्ति के रूप-रंग की अपेक्षा उसके गुणों का महत्त्व अधिक होता है। ऐसा मानना चाहिए कि रूप-रंग का पांच प्रतिशत और पिच्यानवें प्रतिशत गुणों का महत्त्व होता है। व्यक्ति का चेहरा भले सुंदर न हो, किन्तु उसका चरित्र सुंदर होना चाहिए।'

thou dk vkHk"k.k g fou;

„… tuA प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पावन आचार्य प्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'विनम्रता हमारे जीवन का आभूषण है। यह उच्च गोत्र बंध का कारण बनता है। इसके विपरीत अहंकार नीच गोत्र के बंधन का कारण है। मान-सम्मान का मिलना अथवा नहीं मिलना विशेष बात नहीं होती, किन्तु साधना की दृष्टि से विनय का विकास करना चाहिए। उच्च गोत्र की वांछा नहीं करनी चाहिए। विनय हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण गुण होता है। ज्ञान, सत्ता, कुल, रूप, बल आदि का अहंकार न करें।'

पूज्यवर ने आगे कहा--' गुरु के पास रहना महत्त्वपूर्ण नहीं, गुरु की आज्ञा में रहना महत्त्वपूर्ण होता है। गुरु की आज्ञा से गुरुकुलवास में रहना अच्छा है तो उनकी आज्ञा से बहिर्विहार में रहना भी उतना ही अच्छा है। मुख्य बात है--गुरु के दिल में स्थान रहना चाहिए कि यह शिष्य आज्ञा में रहने वाला समर्पित है। यदि ऐसा होता है तो शिष्य के लिए भी आत्मतोष की बात हो जाती है। तेरापंथ के साधु-साध्वियों और समणश्रेणी को ये संस्कार मिलते रहते हैं, इनका उनके जीवन में प्रभाव भी रहता है। धन्य है उन साधु-साध्वियों को, जो कष्टों की परवाह किए बिना गुरु आज्ञा को क्रियान्वित करने का प्रयास करते हैं। मैं तो कई बार सोचता हूं कि हमारे साधु-साध्वियों और समणश्रेणी का खूब गुणगान करना चाहिए। ये कितनी सेवा करते हैं, कितना कार्य करते हैं। किस प्रकार इंगित को महत्त्व देते हैं, हालांकि इसमें और ज्यादा विकास होना चाहिए।'

पूज्यवर ने अपने प्रवचन के मध्य प्रसंगवश कहा--'मैंने पहले भी कहा था कि शासनश्री मुनिश्री पानमलजी स्वामी का चतुर्मास मैंने अचानक पचपदरा के लिए घोषित कर दिया और ये तैयार भी हो गए। हालांकि मुनि विनीतकुमारजी ने कहा कि हमारी प्रबल भावना आपके साथ रहने की है, उसके बाद भी आपका जो आदेश होगा, वह शिरोधार्य है। फिर मैंने चिन्तनपूर्वक इन्हें अपने साथ ही रख लिया। मुनि विनीतजी एक युवा सन्त हैं। इन्होंने गणवत्सल स्व. मुनि बालचन्दजी स्वामी की अच्छी सेवा की है। उन्हें किस प्रकार साधन से यात्रा करवाई। जहां तक मैंने जाना कि पानमलजी स्वामी और इन्होंने बालचन्दजी स्वामी की दायित्व के साथ सेवा की। बालचन्दजी स्वामी ने परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की बहुत सेवा की थी। वृद्ध, रुग्ण और अक्षम साधु-साध्वियों की सेवा होती है तो हमारे लिए भी आत्मतोष की बात होती है। मुनि विनीतजी विनीत बने रहें और खूब सेवा करते रहें।'

पूज्यवर ने अपने प्रवचन के मध्य साध्वी हेमलताजी का चतुर्मास पचपदरा तथा साध्वी लक्ष्यप्रभाजी का चतुर्मास बालोतरा के लिए घोषित किया। प्रवचन के पश्चात् आचार्यवर ने पड़िहारा में दिवंगत साध्वी ज्योतिप्रभाजी (भादरा) के संदर्भ में उद्‌गार व्यक्त करते हुए उनकी स्मृति में चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का अभिभाषण हुआ। मुनि विजयकुमारजी, समणी कमलप्रज्ञाजी और समणी सुमनप्रज्ञाजी ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया।

'kfDr dk n#i;ksx u gks

„† tuA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'व्यक्ति का आकर्षण यदि पदार्थपरक होता है और उसी में खोया रहता है, वह आत्मा की अनुभूति नहीं कर सकता। चेतना की अनुभुति के बिना सफल साधना नहीं हो सकती। पदार्थासक्ति एवं रागानुबंध को छोड़ें। यदि आसक्ति नहीं छूटती है तो धर्म में रुकावट आती रहती है। जो श्रावक-श्राविका सहज धार्मिक होते हैं, वे अपना भवभ्रमण कम कर देते हैं। सभी जागरूक रहकर सम्यक् दिशा में आगे बढ़ते रहें।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आत्मवाद, लोकवाद, कर्मवाद और क्रियावाद-ये जैन दर्शन के चार प्रमुख स्तंभ हैं। कर्मवाद का हमारे जीवन के साथ बहुत गहरा संबंध है। उसी कारण जीवन में सुख-दुःख मिलता है। किसी में ज्ञान का विकास रहता है, किसी में ज्ञान का अभाव रहता है। किसी को प्रतिष्ठा तो किसी को अपमान के दौर से गुजरना पड़ता है। किसी के शक्तिमत्ता तो किसी के शक्तिहीनता की स्थिति आती है। कभी भावात्मक विकास होता है तो कभी उसका ह्रास भी होता है। इन सब स्थितियों के साथ कर्मवाद का संबंध है। कर्मवाद के अंतर्गत आठवां एवं अंतिम कर्म है अंतराय। इसके दान, लाभ, भोग, उपभोग एवं वीर्य ये पांच प्रकार हैं। दान देने, लाभ प्राप्ति, भोग-उपभोग एवं शक्ति के संदर्भ में जो दूसरों को बाधा पहुंचाता है, उसके अंतराय कर्म का बंध होता है। अंतराय कर्म से शक्ति बाधित होती है।'

शक्ति के महत्त्व को रेखांकित करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'हमारे जीवन में शक्ति का बड़ा महत्त्व है। शक्तिमान व्यक्ति महत्त्वपूर्ण होता है। जिसमें शक्ति नहीं है। उसका महत्त्व नहीं होता, प्रतिष्ठा नहीं होती। इसमें बड़े-छोटे का महत्त्व नहीं है, जिसमें तेजस्विता है वह बलवान है। विशालकाय हाथी को छोटा-सा अंकुश वश में कर लेता है। सघन अंधकार को एक छोटा-सा दीपक चीर देता है। बड़ा पहाड़ एक वज्र से चूर-चूर हो जाता है। वस्तुतः व्यक्ति को अपनी शक्ति की पहचान होनी चाहिए। हर व्यक्ति यह सोचे कि वह अपनी शक्ति का विकास कैसे कर सकता है और उसका सदुपयोग कैसे कर सकता है। शरीर बल, मनोबल, वचनबल, धनबल, सत्ताबल आदि अनेक शक्तियां है। यह ध्यान रहे कि इन शक्तियों का दुरुपयोग न हो।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'परम पूज्य गुरुदेव तुलसी शक्ति संपन्न महापुरुष थे। वे ज्ञान संपन्न थे। उनका शरीरबल भी अच्छा था। उन्होंने पंजाब से कन्याकुमारी, कच्छ से कोलकाता तक कितनी लम्बी पदयात्रा की। यह शरीर बल से ही संभव हो पाया। उनके पास सत्ताबल भी था। वे तेरापंथ के सम्राट् व सरताज थे। इतना बड़ा संघ उनके नेतृत्व में था। उनमें ज्ञानशक्ति थी। वे कितनी राग-रागिनियों में गाते और उन्हें सिखाते। उनमें साधना का बल भी था। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ में ज्ञानबल था, साधनाबल था, वे संघ के सरताज थे। उनमें शरीरबल भी था। उन्होंने लम्बा आयुष्य पाया। अपनी मस्तिष्कीय शक्ति से विपुल साहित्य-निर्माण किया, कितनों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'कोई दीक्षा के लिए समुद्यत बने और उसकी दीक्षा में बाधा पहुंचाए तो यह एक तरह से अंतराय डालना हो गया। दीक्षा की अनुमति देने से पूर्व उसकी परीक्षा व समीक्षा की जा सकती है', किन्तु उसमें बाधक नहीं बनना चाहिए।

आचार्यवर ने यह घोषणा की--**^vfuf'pr dky rd dN fodYik d lkFk ?kjk e ixfy;k u dju dk ikyh e tk fu.k; fd;k Fkk] mlI vc LFkfxr djrk gA***

कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी ने गीत प्रस्तुत किया। रुचि सालेचा ने अंग्रेजी में अपने विचार रखे। बालोतरा के तपस्वी श्री बाबूलाल ढ़ेलड़िया देवता के आज तपस्या का इकसठवां दिन था। वे चौसठ दिनों की तपस्या का प्रत्याख्यान आचार्यवर से कर चुके है। तपस्या में बाबूलालजी प्रायः प्रतिदिन गुरुदर्शन हेतु

बालोतरा से आते रहे हैं। उनकी तप अनुमोदना में पूर्णिका चौपड़ा, सुभाष चौपड़ा, महावीर देवता व लोकेश देवता ने अपने भावों को प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि पुलकितकुमारजी ने किया।

eè;e ekx g v.kor

„‡ tuA प्रातःकालीन कार्यक्रम में जोधपुर संभाग स्तरीय अणुव्रत कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन सत्र का प्रारंभ बहिनों के संगान से हुआ। पचपदरा अणुव्रत समिति के कार्याध्यक्ष श्री भूपत चौपड़ा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ.महेन्द्र कर्णावट ने आज के संदर्भ में अणुव्रत की प्रासंगिकता की चर्चा की। क्षेत्रीय प्रभारी श्री ओम बांठिया ने अपने विचार रखे। स्थानीय अणुव्रत समिति द्वारा भराए गए अणुव्रत संकल्प पत्र पदाधिकारियों ने पूज्यवर के चरणों में समर्पित किए। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में आज प्रविष्ट होने वाली बहिनें कुसुम व चंदा ने संयुक्त रूप से गीत प्रस्तुत किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जिस जीवन में मानवीय एकता, समता व करुणा जीवन में समाहित हो जाए, वह जीवन अनुकरणीय व उपयोगी बन जाता है। अणुव्रत आचार का एक अभियान है। इसके परिपालन से जीवन को आचारवान बनाया जा सकता है। इस अणुव्रत प्रशिक्षण शिविर में जो संभागी बने हैं वे सबसे पहले स्वयं अणुव्रती बने। नियमों के पालन के साथ संपर्क में आने वाले अन्य लोगों को भी अणुव्रती बनाएं। अणुव्रती कार्यकर्ता का प्रभाव पहले उसके जीवन से पड़ता है। कार्यकर्ता प्रशिक्षण प्राप्त कर काम करने का संकल्प करें।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'महाव्रत को स्वीकृत करने वाला व साधना करने वाला अनगार-साधु होता है। गृहस्थ जीवन में रहने वाला व पूर्ण अनगारत्व की साधना न कर सकने वाला अणुव्रत की साधना कर सकता है। महाव्रत की साधना कठिन साधना है। अणुव्रत अतिकठिन भी नहीं तो अति खुलावट भी नहीं है। अणुव्रत मध्यम मार्ग है। अणुव्रत जैन परम्परा का परिभाषिक शब्द है, उसे आचार्य तुलसी ने असीम बनाने का प्रयास किया और उसे आंदोलन का रूप दिया। बारहव्रतों की साधना में अणुव्रत है। यह जैन श्रावक के लिए समीचीन है। अणुव्रत की आचार संहिता में जैन जैनेतर किसी का भेद नहीं है। कोई भी अपनी धर्म परम्परा में रहते हुए उसे स्वीकार कर सकता है। मात्र जैनेतर ही नहीं, अपने आपको अधार्मिक या नास्तिक कहलाने वाला भी अणुव्रती बनने का अधिकारी है।'

अणुव्रत मिशन से जुड़े कार्यकर्ताओं को विशेष अभिप्रेरणा प्रदान करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा--'अणुव्रत आंदोलन के साथ कितने-कितने कार्यकर्ता जुड़े हुए है, ऐसे कार्यकर्ताओं का जीवन अणुव्रत के अनुरूप होना चाहिए। उनका जीवन नशामुक्त हो। कार्यकर्ता वह होता है, जो दूसरों के लिए कार्य करता है। कार्यकर्ता को अच्छा श्रोता होना चाहिए। किसी भी तरह की आलोचना होने पर उसे सुनने का साहस होना चाहिए। आलोचना से घबराना नहीं चाहिए। उसे काम करते रहना चाहिए। काम अच्छा है तो आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों अंकन हो सकेगा। कार्यकर्ता में कार्य दक्षता होनी चाहिए, वक्तृत्व कौशल होना चाहिए। वे वैदुष्य के साथ अपनी बात प्रस्तुत करे। उसका व्यवहार विनम्र एवं शालीन होना चाहिए। फूहड़पन से बचें। कार्यकर्ताओं में लक्ष्य स्पष्ट रहना चाहिए। लक्ष्य व करणीय के प्रति अंतर्मन में समर्पण होना चाहिए। समर्पण के साथ पुरुषार्थ किया जाए तो सफलता हस्तगत हो सकती है। अच्छे व्यक्ति व अच्छे समाज का निर्माण अणुव्रत से संभव है, इसलिए कार्यकर्ता अणुव्रत का कार्य करने का लक्ष्य बनाएं और उसके लिए अपने समय व शक्ति का समुचित नियोजन करें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि पुलकितकुमारजी ने किया।

पचपदरा अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित अणुव्रत कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर के विभिन्न सत्रों में साध्वीप्रमुखाजी, मंत्री मुनिश्री, मुख्य नियोजिकाजी ने अणुव्रत जीवन शैली व विभिन्न आयामों पर प्रशिक्षण दिया। मुनि उदितकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर), डॉ. महेन्द्र कर्णावट व अन्य अणुव्रती

कार्यकर्ताओं के वक्तव्य हुए। शिविर में जोधपुर संभाग के कई क्षेत्रों से छियानवें कार्यकर्ता उपस्थित थे।

घरों में पगलिया करने के संदर्भ में कल घोषित नई नीति के अनुसार आज आचार्यवर ने विभिन्न बास व गलियों में श्रावकों के घरों में चरण स्पर्श किया। आज करीब सत्तर परिवार गुरु चरणों के स्पर्श से लाभान्वित हुए। सब जगह उल्लास व उमंग परिलक्षित हुआ।

Ikekf;d l gkrh g ëke dh dekb

„^ tuA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'मनुष्य जीवन ऐसा है जहां से चारों गतियों में जाने की स्थिति रहती है। इस जीवन में सातवीं नरक में जाने तक के पापों का बंधन कर लेता है तो सबसे ऊंचे देवलोक सर्वार्थ सिद्ध विमान में जाने योग्य पुण्य का भी उपार्जन कर लेता है। इसी जीवन से सर्वथा कर्ममुक्त होकर सिद्धत्व को प्राप्त किया जा सकता है। जागरूक व अप्रमत्त बनकर व्यक्ति सही साधना में लगे। जो व्यक्ति आकांक्षा रहित होकर मात्र कर्म निर्जरा के लक्ष्य के साथ धर्म करता है उसके सामान्यतया दुर्गति का बंध नहीं होता। भौतिक आकांक्षा को धर्म के साथ जोड़ना श्रेयस्कर नहीं है।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने प्रवचन में कहा--'षडावश्यक में सामायिक को पहला स्थान प्राप्त है। इसका जैन साधना पद्वति में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। आत्मा के आस-पास रहने की व समताभाव की विशिष्ट साधना करने का उपक्रम है-सामायिक। साधु व श्रावक-दोनों के सामायिक होती है। साधु के यावज्जीवन सर्व सावद्य योग का तीन करण तीन योग से त्याग होता है। यह उच्च कोटि की सामायिक है। श्रावक देशविरति स्वीकार करता है। बारह व्रतों में नौवां व्रत है सामायिक। यह एक मुहुर्त अर्थात् अड़तालीस मिनट प्रमाण होता है। साधु व श्रावक के सामायिक में अंतर होते हुए सामायिक में श्रावक साधु सदृश हो जाता है। मुखवस्त्रिका, चादर आदि के प्रयोग से वेशभूषा काफी समान हो जाती है।'

सामायिक की तात्विक मीमांसा करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'श्रावक के तीन प्रकार की सामायिक होती है। पहली छह कोटि सामायिक में 'दुविहं तिविहेणं' से दो कारण तीन योग से त्याग होता है। इससे करूं नहीं मन से वचन से काया से तथा कराऊं नहीं मन से वचन से काया से इस तरह छोटि कोटि सामायिक होती है। अनुमोदूं नहीं वचन से काया से जुड़ जाने पर दूसरी आठ कोटि व अनुमोदूं नहीं मन से और जुड़ने पर नव कोटि सामायिक निष्पन्न हो जाती है। सामायिक सावद्य योग विरति की साधना है, पापमय प्रवृति से विरत होने की साधना है।'

सजगता से सामायिक करने की बलवती प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'यथासंभव प्रतिदिन एक सामायिक का अभ्यास निरंतर चलते रहता चाहिए। समय हो तो एक दिन में अनेक सामायिक भी की जा सकती है। एक साथ कई सामायिक करने की भी विधि है। यदि प्रतिदिन करनी संभव न बने तो माह में चार-पांच सामायिक से शुरू करें। सामायिक की साधना जागरूकता से चले। इसमें जो समय नियोजित किया है, उसका समुचित उपयोग हो। सामायिक में अखबार पढ़ना समीचीन नहीं है। पढ़ना ही है तो उत्तराध्ययन सूत्र का अनुवाद पढ़ें, जीव अजीव व जैन तत्त्वविद्या पढ़ें। सामायिक में टी.वी. पर न्यूज आदि सुनना भी समीचीन नहीं है। इसमें तो मात्र साधना चले। चादर, मुंहपत्ती, आसन, प्रमार्जनी के प्रयोग से सामायिक का सुंदर रूप बन जाता है। सामायिक के दौरान बिना प्रयोजन न चलें। यदि चलना आवश्यक हो बिना देखे नहीं चलना चाहिए। सामायिक का समय शुभयोग में बीते, विषमता व राग-द्वेष से विरत रहें, व्याख्यान आदि के समय भी यथासंभव सामायिक का प्रयास हो। सामायिक में पुरुष व्यापार आदि तथा बहिनें रसोई आदि की चर्चा न करें। सामायिक में तत्त्वज्ञान, जप, स्वाध्याय का क्रम सुचारू रूप से चले। वस्तुतः सामायिक के द्वारा धर्म की कमाई कर सकते हैं'

कार्यक्रम में मुनि मदनकुमारजी, श्री दिलीप मदानी ने गीत तथा श्री विजयराज संकलेचा ने कविता

प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि पुलकितकुमारजी ने किया। घरों में चरण स्पर्श के क्रम में आज छिहत्तर घरों में गुरुवर का पदार्पण हुआ।

Ikèoh T;kfrIHkkth dkyèke dk Ikiklr

साध्वी ज्योतिप्रभाजी (भादरा) २१ जून २०१२ को पड़िहारा में कालधर्म को प्राप्त हो गई। उनके विषय में उद्‌गार व्यक्त करते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा ‘साध्वी ज्योतिप्रभाजी भादरा के नाहटा परिवार से संबद्ध थीं। तेरह वर्ष की बाल्यावस्था में उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से साध्वी दीक्षा स्वीकार की। वे बासठ वर्षों तक साध्वी गुलाबांजी (भादरा) की सहवर्तिनी के रूप रहीं। उन्होंने देश के विभिन्न प्राप्तों में करीब ३५००० किलोमीटर की यात्रा की। अपने जीवनकाल में उन्होंने सभी आगमों का वाचन तथा अनेक आगमों को कंठस्थ किया। सन् २००५ लाडनूं मर्यादा महोत्सव के अवसर पर परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने उन्हें अग्रगण्य नियुक्त किया। उनकी व्यवहार कुशलता, संघनिष्ठा और आचारनिष्ठा प्रशस्य थी। हमने उन्हें गतवर्ष पड़िहारा में रखा। पिछले दिनों वे काफी अस्वस्थ थीं। विगत आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को करीब ८३ वर्ष की आयु में रात्रि लगभग ८ बजकर ४६ मिनिट पर उनका स्वर्गवास हो गया। उनकी आत्मा खूब आध्यात्मिक विकास करती हुई शीघ्र मोक्षश्री का वरण करे।’

साध्वी धर्मप्रभाजी आदि सहवर्तिनी साध्वियों का उन्हें अच्छा सहकार प्राप्त हुआ। पड़िहारा के श्रावक समाज ने जागरूकतापूर्वक अपने दायित्व का निर्वहन किया।

Lefr&Icy

- लाडनूं निवासी गुवाहाटी प्रवासी श्रीमती सोहनीदेवी कोठारी (धर्मपत्नी-स्व.जयचन्दलालजी कोठारी) का चौरानबे वर्ष की अवस्था में पैंतीस मिनट के संथारे में स्वर्गवास हो गया। वह श्रद्धालु और समर्पित श्राविका थीं। उनके पति जयचन्दलालजी कोठारी तत्वज्ञ श्रावक थे। उनमें तत्त्व की अच्छी समझ व पकड़ थीं। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के कृपापात्र थे।
- पचपदरा निवासी कोप्पल-हुबली प्रवासी श्रीमती समदादेवी चोपड़ा (धर्मपत्नी-स्व.घमंडीरामजी चोपड़ा) का डेढ़ घंटे के संथारे में स्वर्गवास हो गया। वह तपस्विनी और सेवाभावी श्राविका थीं। उनकी जेठाणी श्रीमती अणचीदेवी के भी अठारह दिनों का संथारा आया था और उन्हें ‘तपोनिष्ठ श्राविका’ संबोधन प्राप्त था।
- उदासर निवासी श्रीमती मूलीदेवी महनोत (धर्मपत्नी-श्री दीपचन्दजी महनोत) का देहावसान हो गया। वे धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत श्राविका थीं। उदासर में संतदर्शन, प्रवचन श्रवण आदि का नित्यक्रम था। उनकी विशेष प्रेरणा का ही परिणाम है कि प्रत्येक शुक्ला त्रयोदशी को परिवार में उपवास व त्यागमय वातावरण रहता है। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- छापर निवासी श्रीमती रायकंवरीदेवी मालू (धर्मपत्नी-स्व.मोहनलालजी मालू) का दिल्ली में देहान्त हो गया। वे साध्वी सिरेकंवरजी की संसारपक्षीया बहन थीं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा ‘श्रद्धा की प्रतिमूर्ति’ संबोधन प्राप्त रायकंवरीदेवी ने तीन वर्षीतप व इक्कीस तक की लड़ी संपन्न की थी। बारह वर्ष की उम्र से जमीकन्द और रात्रि भोजन का परित्याग था। तीस वर्षों से दो माह एकान्तर तप और प्रतिदिन आठ सामायिक के साथ जप में तल्लीन रहती थीं। उनके ज्येष्ठ पुत्र विजयसिंहजी राजकोट के व दो पुत्र अहमदाबाद के अच्छे कार्यकर्ता हैं। कनिष्ठ पुत्र नरपतजी दिल्ली तेरापंथी सभा के मंत्री हैं।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

ftKklk vkidh % lekèkku iT;ioj dk

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने विज्ञप्ति के पाठकों पर महान् अनुग्रह करते हुए उनकी जिज्ञासाओं को स्वयं समाहित करने की स्वीकृति प्रदान की है। पाठक अपनी विविध विषयक जिज्ञासाएं campoffice13@gmail.com पर प्रेषित कर सकते हैं। चयनित जिज्ञासाएं ही आचार्यवर द्वारा प्रदत्त समाधान के साथ यथासमय विज्ञप्ति में प्रकाशित की जा सकेंगी। इस संदर्भ में अग्रांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं -

- जिज्ञासा संक्षिप्त, सारपूर्ण और स्पष्टतया लिखित हो।
- पत्र पर 'जिज्ञासा' शीर्षक अवश्य लिखें।
- एक व्यक्ति तीन जिज्ञासाओं से अधिक जिज्ञासाएं प्रेषित न करे।
- जिज्ञासा अपने नाम और संपर्क सूत्र के साथ ही प्रेषित करें। अन्य कोई बात पत्र में न लिखें।
- जिज्ञासा प्रेषित करने के पश्चात् उत्तर प्राप्ति हेतु फोन, पत्र व्यवहार आदि न करें।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

५१००/- स्व. श्री मांगीलालजी सुराणा (सुपुत्र-स्व. बंशीलालजी सुराणा, तारानगर-कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र डालचन्द, विजयसिंह, सुपौत्र नवीन, रौनक, गौरव सुराणा द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. भंवरलालजी बाबेल (सुपुत्र-स्व. गोगालालजी बाबेल, बागोर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र हाबूलाल, भेरूंलाल, घेवरचन्द, विमलकुमार, प्रवीणकुमार, सुपौत्र संजय, मुकेश, चन्द्रप्रकाश, रविप्रकाश, रोहित, राहुल, संयम, भावेश बाबेल परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती बरजीदेवी छाजेड़ (पुत्रवधू-श्रीमती हड़मानीदेवी छाजेड़, धर्मपत्नी श्री नोरतनमल छाजेड़, श्रीडूंगरगढ़) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू राकेश-प्रभा, राजेश-रेखा छाजेड़, गुवाहाटी-हैदराबाद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री कमलसिंह बैद एवं श्रीमती प्रभा बैद (रतनगढ़-मुम्बई) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र शान्तिकुमार, चन्द्रप्रकाश बैद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- नवनिर्मित तेरापंथ भवन, समदड़ी के लोकार्पण के उपलक्ष्य में लोकार्पणकर्त्री श्रीमती गुलाबदेवी अब्बानी (पुत्रवधू-स्व. कुन्दनमलजी, धर्मपत्नी स्व. वीरचन्द अब्बानी), उनके सुपुत्र व पुत्रवधू अरुण-लक्ष्मी, सुपौत्र प्रेक्षित, सुपौत्री प्रिंकल, प्रेक्षा अब्बानी परिवार, समदड़ी-जोधपुर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती वरजूदेवी (धर्मपत्नी-स्व. बादरमलजी बस्ताजी जीरावला) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू वेलचन्द-गोमीदेवी, सुपौत्र व पौत्रवधू शांतिलाल-लता, हितेन्द्र-डिम्पल, राकेश-अर्पिता, प्रपौत्र नमन, भावेश, प्रपौत्री लिशा, चेरी एवं समस्त जीरावला परिवार, समदड़ी-सूरत-हावेरी द्वारा प्रदत्त।

d'koiIkn prohi] icUèkd&vkn'k IkfgR; l?k] }kjk&vkpk; egkJe.k iokl 0;oLFkk lfefr]
ik- tIky&…††,„† ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % ‹^Š,,‡‡…Šƒ] ‹…‡„†,†^†ƒ
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com
idk'ku fnukd % …,&^&„,ƒ„

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **d'koiIkn prohA**